



KVS

Principal & Vice Principal

Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS)

भाग - 4



INDEX

S.N.	Content	P.N.
इकाई - IV		
अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाना		
1.	आधारभूत ढांचा: सीखने के लिए अनुकूल माहौल	1
2.	स्कूली शिक्षा में विविधता को समझना	6
3.	विकलांगता एक सामाजिक संरचना के रूप में	11
4.	विकलांगता के प्रकार: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण	15
5.	स्कूल स्तर पर विकलांगताओं की पहचान	22
6.	दिव्यांगों के लिए हस्तक्षेप	28
7.	समावेशी शिक्षा	34
8.	समावेशी स्कूल नेतृत्व में प्रिंसिपल की भूमिका	39
9.	समावेशी कक्षा वातावरण बनाना	44
10.	विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम 2016	50
11.	आरपीडब्ल्यूडी एक्ट 2016 के तहत शिक्षा के अधिकार और संस्थागत कर्तव्य	56
12.	स्कूलों में RPWD ACT की ड्यूटी को समझना और लागू करना: एक प्रिंसिपल के लिए ऑपरेशनल गाइड	61
13.	स्कूल लेवल पर समावेशी शिक्षा लागू करने के लिए ऑपरेशनल फ्रेमवर्क	67
14.	समावेशी स्कूलों में व्यवहार प्रबंधन: सिस्टम, दृष्टिकोण, कानूनी-नैतिक जिम्मेदारियाँ	74
15.	स्कूल मेंटल हेल्थ और वेलबीइंग: एक कॉम्प्रिहेंसिव प्रिंसिपल-लेवल फ्रेमवर्क	80
16.	स्कूल गाइडेंस और काउंसलिंग: फाउंडेशन, सिस्टम, प्रैक्टिस और लीडरशिप-लेवल की समझ	87
17.	इंटीग्रेटेड लर्निंग इकोसिस्टम के तौर पर स्कूल-कम्युनिटी: स्ट्रक्चर, फ्रेमवर्क और प्रिंसिपल-लेवल स्ट्रेटेजी	93
18.	RPWD एक्ट 2016: नींव, विकास, अधिकार-आधारित दर्शन, संरचना, परिभाषाएँ और प्रशासनिक ढांचा	99
19.	RPWD एक्ट 2016 के तहत अधिकार और हक: एक पूरी प्रिंसिपल लेवल की व्याख्या	105
20.	स्कूलों में RPWD एक्ट 2016 लागू करना: मॉनिटरिंग, डॉक्यूमेंटेशन, एक्सेसिबिलिटी, पेडागॉजिकल अडैप्टेशन, प्रिंसिपल की जिम्मेदारियाँ	110
21.	स्कूलों में साइकोसोशल सपोर्ट सिस्टम बनाना: स्ट्रक्चर, प्रोसेस, रोल और लीडरशिप की समझ	117

22.	स्कूलों में टीचर और सपोर्ट स्टाफ की भलाई: स्ट्रेस, सिस्टम, पॉलिसी, ऑर्गेनाइजेशनल साइकोलॉजी और लीडरशिप ड्यूटी	122
23.	एक सुरक्षित और सुरक्षात्मक स्कूल माहौल बनाना: कानूनी, मनोवैज्ञानिक, संगठनात्मक और नेतृत्व ढांचे	127
24.	एक लर्निंग रिसोर्स के तौर पर स्कूल: कॉन्सेप्चुअल, एडमिनिस्ट्रेटिव, पेडागॉजिकल और लीडरशिप-लेवल की समझ	134
25.	सीखने के संसाधन के रूप में समुदाय: शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक और नेतृत्व-स्तर की समझ	140
26.	एकेडमिक लीडरशिप: स्कूल में बेहतरीन काम करने के लिए इंस्ट्रक्शनल, स्ट्रेटेजिक, ऑर्गेनाइजेशनल, डेटा-बेस्ड और सबको साथ लेकर चलने वाले तरीके	147
27.	क्लासरूम मैनेजमेंट: थोरेटिकल फाउंडेशन, प्रैक्टिकल सिस्टम, इनक्लूसिव प्रैक्टिस और लीडरशिप की जिम्मेदारियां	153
28.	मॉनिटरिंग, इवैल्यूएशन और फीडबैक: लगातार स्कूल सुधार के लिए लीडरशिप आर्किटेक्चर	159
29.	केवीएस प्रिंसिपल के लिए “एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने” का पूर्ण समेकन	167

IV UNIT

अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाना

आधारभूत ढांचा: सीखने के लिए अनुकूल माहौल

1. सीखने के लिए अच्छे माहौल का मतलब

सीखने के लिए अच्छा माहौल उन सभी फिजिकल, साइकोलॉजिकल, इमोशनल, सोशल, इंस्ट्रक्शनल, ऑर्गेनाइजेशनल और कल्वरल हालात को कहते हैं जो असरदार टीचिंग-लर्निंग में मदद करते हैं। यह सिर्फ़ स्कूल के मटीरियल इंफ्रास्ट्रक्चर तक ही सीमित नहीं है; बल्कि, यह आपसी रिश्ते, ऑर्गेनाइजेशनल कल्वर, सेप्टी नॉर्स, लर्नर डाइवर्सिटी, इनक्लूजन, स्कूल का माहौल, मेंटल हेल्थ सिस्टम और पेडागोजिकल इकोसिस्टम जैसी गहरी बातों को भी जोड़ता है।

एडवांस्ड एजुकेशनल लीडरशिप के नज़रिए से, इस माहौल को एक मल्टी-लेयर्ड इकोलॉजी के तौर पर देखा जाता है जो लर्नर्स की ऑटोनॉमी, एंगेजमेंट, वेल-बीइंग, कॉग्निटिव डेवलपमेंट और सोशियो-इमोशनल ग्रोथ को बढ़ावा देता है। यह इंटरप्रिटेशन ग्लोबल फ्रेमवर्क (UNESCO इनक्लूसिव स्कूल मॉडल, WHO स्कूल हेल्थ मॉडल) और इंडियन रिफॉर्म्स (NEP 2020, NCF 2023) के साथ मेल खाता है।

एक स्कूल तब मददगार बन जाता है जब:

- बच्चे भावनात्मक रूप से सुरक्षित और सम्मानित महसूस करते हैं,
- सीखना व्यक्तिगत है,
- विविधता को अपनाया जाता है,
- टीचर्स को प्रोफेशनल ऑटोनॉमी और सपोर्ट मिलता है,
- लीडरशिप नैतिक और निर्देशात्मक है, और
- नीतियां समानता और समावेश को बढ़ावा देती हैं।

2. एक अनुकूल वातावरण के दार्शनिक आधार

(क) बाल-केंद्रित दर्शन

रूसो, फ्रोबेल, मोटेसरी, टैगोर, गांधी जैसे विचारकों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चा डर, दबाव या सख्त कंट्रोल से मुक्त माहौल में सबसे अच्छा सीखता है। KVS प्रिंसिपल PYQs अक्सर इस बात को सही ठहराते हैं कि माहौल को खुद को ज़ाहिर करने, क्रिएटिविटी और नैचुरल ग्रोथ को बढ़ावा देना चाहिए।

मॉडर्न व्याख्याएं इन चीजों को मिलाती हैं:

- रचनावाद (ज्ञान सह-निर्मित होता है),
- अनुभवात्मक अधिगम (करके सीखना),
- विभेदित शिक्षण, और
- फ्लोक्सिबल लर्निंग इकोसिस्टम।

(बी) मानवतावादी मनोविज्ञान - मास्लो, रोजर्स

एक अच्छा माहौल इस इंसानी सोच पर आधारित होता है कि सीखने वाले तब आगे बढ़ते हैं जब उनकी बेसिक साइकोलॉजिकल ज़रूरतें - अपनापन, सम्मान, सुरक्षा - पूरी होती हैं।

मास्लो की हायरार्की इस बात पर ज़ोर देती है:

- शारीरिक आराम,
- सुरक्षा (भावनात्मक + शारीरिक),
- सामाजिक जुड़ाव,
- सम्मान,
- आत्म-साक्षात्कार।

कार्ल रोजर्स बिना शर्त पॉजिटिव रिस्पेक्ट, ऐपैथी और जेनुइनेस के प्रिंसिपल्स जोड़ते हैं, जो एक स्कूल का इमोशनल इंफ्रास्ट्रक्चर बनाते हैं।

(सी) व्यवहारिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण

एक अच्छा माहौल व्यवहार में एक जैसा होना (साफ़ नियम, पॉजिटिव मज़बूती, पहले से तय रूटीन) के साथ-साथ कॉग्निटिव जुड़ाव (ऊँची सोच, पूछताछ पर आधारित सीखना) को भी जोड़ता है।

एजुकेशनल लीडर बिना किसी तानाशाही के अनुशासन पक्का करते हैं - PBIS (पॉजिटिव बिहेवियर इंटरवेशन एंड सपोर्ट) पर ध्यान देते हैं।

(d) रचनावादी ढाँचे (वायगोत्स्की, पियाजे)

वायगोत्स्की के ज़ोन ऑफ़ प्रॉक्सिमल डेवलपमेंट (ZPD) का मतलब है कि माहौल को सीखने में मदद करनी चाहिए - सोशल इंटरैक्शन और साथियों का साथ बहुत ज़रूरी है।

पियाजे के डेवलपमेंटल स्टेज के लिए ऐसे माहौल की ज़रूरत होती है जो उम्र के हिसाब से सही, कॉग्निटिव रूप से स्टिम्युलेटिंग और एक्सपीरिएंशियली रिच हो।

(ई) पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत (ब्रॉफेनब्रेनर)

प्रिंसिपल-लेवल के जवाबों के लिए बहुत काम की, ब्रॉफेनब्रेनर की योरी सीखने को कई लेयर्स से घिरा हुआ मानती है -

माइक्रोसिस्टम (क्लासरूम), मेसोसिस्टम (स्कूल), एक्सोसिस्टम (पॉलिसी), मैक्रोसिस्टम (कल्चर)।

एक अच्छा माहौल सभी लेयर्स के लिए ज़रूरी है।

3. सीखने के लिए अच्छे माहौल के हिस्से

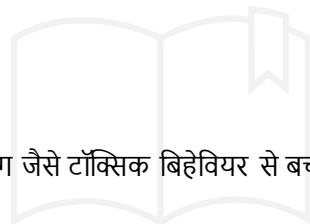
(i) भौतिक वातावरण

- सुरक्षित, साफ़, आसानी से मिलने वाला, बिना रुकावट वाला इंफ्रास्ट्रक्चर।
- सही रोशनी, हवा, बैठने की जगह, सीखने के कोने।
- बच्चों के अनुकूल फर्नीचर।
- स्टूडेंट्स के काम का डिस्लो।
- फंक्शनल लैब, लाइब्रेरी, ICT यूनिट।

KVS प्रिंसिपल PYQs लगातार ऐसे एनवायरनमेंटल फैक्टर्स को टेस्ट करते हैं जो एंगेजमेंट को बढ़ावा देते हैं और डिस्ट्रैक्शन को कम करते हैं।

(ii) मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक वातावरण

- टीचर-स्टूडेंट के बीच सम्मानजनक रिश्ते।
- भरोसा, हमदर्दी, मंजूरी।
- सज़ा या बेइज़ज़ती का कोई डर नहीं।
- स्टाफ के लिए भी इमोशनल सिक्योरिटी।
- स्कूलों को बुलीइंग, ताना, बायस और पब्लिक शेमिंग जैसे टॉक्सिक बिहेवियर से बचना चाहिए।



(iii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण

- विविधता और बहुभाषावाद का उत्सव।
- सांस्कृतिक संवेदनशीलता।
- सहयोग, शांति, लोकतंत्र के मूल्य।
- साथियों के सपोर्ट को बढ़ावा देना।

(iv) अनुदेशात्मक वातावरण

- रचनावादी शिक्षाशास्त्र।
- अलग-अलग निर्देश।
- एक्टिव, एंगेज्ड, इंकायरी-ओरिएंटेड लर्निंग।
- फॉर्मेटिव असेसमेंट और फीडबैक सिस्टम।
- आर्ट्स, गेम्स, स्पोर्ट्स, लाइफ स्किल्स का इंटीग्रेशन।

(v) संगठनात्मक और नेतृत्व वातावरण

- दूरदर्शी नेतृत्व।
- मिलकर काम करने वाली संस्कृति।
- पारदर्शी संचार।
- टीचर प्रोफेशनल डेवलपमेंट।
- स्कूल का अच्छा माहौल।
- डेटा-आधारित निर्णय लेना।

4. स्कूल का माहौल और सीखने के माहौल के साथ उसका रिश्ता

स्कूल का माहौल स्कूल के नॉर्स, वैल्यूज़, रिश्तों, सेफ्टी स्टैंडर्ड्स, टीचिंग प्रैक्टिस और लीडरशिप स्टाइल की कलेक्टिव सोच है। एक अच्छा स्कूल माहौल होता है:

- सुरक्षित
- देखभाल करने वाला
- भागीदारी
- अकादमिक रूप से उन्नुख
- सहित
- नैतिक

एजुकेशनल लीडरशिप में आमतौर पर चार पहलुओं का अध्ययन किया जाता है:

1. सेफ्टी क्लाइमेट - फिजिकल + इमोशनल प्रोटेक्शन।
2. रिश्ते का माहौल - विश्वास, सम्मान, सहयोग।
3. टीचिंग-लर्निंग माहौल - उम्मीदें, प्रैक्टिस, सपोर्ट सिस्टम।
4. इंस्टीट्यूशनल/ऑर्गनाइजेशनल माहौल - पॉलिसी, मैनेजमेंट, रिसोर्स एलोकेशन।
स्कूल का अच्छा माहौल बेहतर एकेडमिक परफॉर्मेंस, कम एब्सेंट होना, बेहतर मेंटल हेल्थ, टीचर का रिटेंशन और कम्युनिटी का मज़बूत भरोसा से जुड़ा है।
5. स्कूल कल्चर और उसकी भूमिका
जहां स्कूल का माहौल सोच के बारे में है, वहाँ स्कूल कल्चर का मतलब है स्कूल के काम करने के तरीके पर असर डालने वाले गहरे, पक्के नियम, मूल्य, परंपराएं और रीति-रिवाज।

सीखने के लिए अनुकूल संस्कृति में शामिल है:

- साझा दृष्टिकोण,
- सहकर्मिता,
- व्यावसायिकता,
- निरंतर सीखना,
- समावेशी मूल्य,
- इनोवेशन के लिए खुलापन।

लीडरशिप को मॉडलिंग, सिस्टम और एक जैसे व्यवहार के ज़रिए सोच-समझकर कल्चर को आकार देना चाहिए।

6. सीखने के लिए अच्छे माहौल के पीछे के सिद्धांत

1. सुरक्षा सर्वप्रथम

फिजिकल सिक्योरिटी (गेट, सर्विलांस, फर्स्ट एड, डिज़ास्टर मैनेजमेंट) और साइकोलॉजिकल सेफ्टी (बुलिंग प्रिवेंशन, इमोशनल सपोर्ट)।

2. समावेशन और समानता

विकलांगता, भाषा, जाति, लिंग, आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं।

3. बाल अधिकार-आधारित दृष्टिकोण

UNCRC, RTE एक्ट, NEP 2020 के साथ अलाइन्ड।

4. बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक स्वीकृति

घरेलू भाषाओं का सम्मान, अलग-अलग तरह के सीखने के बैकग्राउंड।

5. इमोशनल सपोर्ट के साथ एकेडमिक सख्ती

ऊँची उम्मीदों और दयालु शिक्षा का मिश्रण।

6. सहयोगात्मक नेतृत्व

प्रिंसिपल टीमवर्क और प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को बढ़ावा देते हैं।

7. ग्रोथ माइंडसेट और लगातार सुधार

स्टूडेंट्स और टीचर्स को चैलेंज लेने और फेलियर से सीखने के लिए बढ़ावा दिया जाता है।

7. ऐसा माहौल बनाने के लिए ज़रूरी चीजें

A. शिक्षक की योग्यता और दृष्टिकोण

टीचर्स को चाहिए:

- समावेशी शिक्षण पद्धति को लागू करना,
- सकारात्मक बातचीत बनाए रखें,
- लचीले तरीकों का उपयोग करें,
- विविधता को समझें,
- रचनात्मक आकलन लागू करें,
- क्लासरूम के व्यवहार को अच्छे से मैनेज करें।

B. छात्र-केन्द्रीयता

सीखने वालों को इसमें हिस्सा लेना चाहिए:

- कक्षा के निर्णय,
- समकक्ष मूल्यांकन,
- स्वमूल्यांकन,
- स्कूल की गतिविधियाँ।

- C. नेतृत्व प्रतिबद्धता**
प्रिंसिपल ऐसे सिस्टम बनाते हैं जो टीचिंग-लर्निंग और वेल-बीइंग को सपोर्ट करते हैं।
- D. माता-पिता और समुदाय की भागीदारी**
कम्युनिटी रिसोर्स असल दुनिया की लर्निंग को बेहतर बनाते हैं।
- E. प्रभागी नीतियाँ**
एंटी-बुलिंग, एकेडमिक ईमानदारी, सबको साथ लेकर एडमिशन, बच्चों की सुरक्षा।
- 8. अनुकूल माहौल को सपोर्ट करने वाले थोरेटिकल मॉडल**
- (1) **ब्लूम का महारत सीखने का मॉडल**
माहौल को मास्टरी को सपोर्ट करना चाहिए:
 - स्पष्ट उद्देश्य,
 - रचनात्मक प्रतिक्रिया,
 - सुधारात्मक निर्देश।
 - (2) **कोल्ब का अनुभवात्मक शिक्षण चक्र**
सबको साथ लेकर चलने वाला माहौल अलग-अलग तरह के कॉन्सिटिव स्टाइल दिखाने वाले एक्सपीरिएंशियल कामों को बढ़ावा देता है।
 - (3) **सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन (यूडीएल)**
एक ज़रूरी आज का फ्रेमवर्क जो इस बात पर ज़ोर देता है:
 - प्रतिनिधित्व के कई साधन,
 - सगाई,
 - अभिव्याक्ति।
UDL, RPWD एकट के "रीजनेबल अकोमोडेशन" के प्रिंसिपल के साथ अलाइन है।
 - (4) **सकारात्मक मनोविज्ञान ढांचा**
वेल-बीइंग, रेजिलिएंस, ग्रैटिट्यूड, स्ट्रेंथ-बेस्ड टीचिंग पर फोकस करें।
 - (5) **CASEL SEL मॉडल**
पांच मुख्य काबिलियत - सेल्फ-अवेयरनेस, सेल्फ-मैनेजमेंट, सोशल अवेयरनेस, रिलेशनशिप स्किल्स, ज़िम्मेदारी से फैसले लेना - इमोशनल माहौल को बनाती हैं।
- 9. अनुकूल वातावरण में बाधाएँ**
- संरचनात्मक बाधाएँ**
- अपर्याप्त कक्षाएँ
 - खराब रखरखाव
 - बड़ी कक्षा का आकार
 - कठोर समय सारिणी
- शैक्षणिक बाधाएँ**
- शिक्षक-केंद्रित विधियाँ
 - विभेदीकरण का अभाव
 - अपर्याप्त प्रतिक्रिया
 - रटने पर अत्यधिक निर्भरता
- सामाजिक बाधाएँ**
- पक्षपात
 - रुद्धिबद्धता
 - बदमाशी
 - सहकर्मी समूहों से बहिष्कार
- संगठनात्मक बाधाएँ**
- कमज़ोर नेतृत्व
 - खराब संचार
 - स्कूल की नीतियों में सामंजस्य की कमी
- मनोवैज्ञानिक बाधाएँ**
- कम प्रेरणा
 - चिंता

- विफलता का भय
- शिक्षक बर्नआउट
प्रिंसिपल्स को कैपेसिटी बिल्डिंग, फीडबैक कल्चर और मज़बूत मॉनिटरिंग जैसी सिस्टमैटिक स्ट्रेटेजी के ज़रिए इन रुकावों का पता लगाना और उन्हें दूर करना होगा।

10. सीखने का अच्छा माहौल बनाने की स्ट्रेटेजी

1. भावनात्मक माहौल को बेहतर बनाना

- सुबह की मीटिंग, सर्कल टाइम
- माइंडफुलनेस, ध्यान
- सकारात्मक सुदृढीकरण
- शिक्षक सहानुभूति प्रशिक्षण
- परामर्श पहुँच

2. भौतिक वातावरण में सुधार

- बाधा-मुक्त पहुँच
- विशेष शिक्षकों का कमरा
- सीखने के कोने
- स्वच्छता ऑडिट
- सुरक्षा ऑडिट

3. पढ़ाई को स्टूडेंट-सेंटर्ड बनाना

- परियोजना-आधारित शिक्षा
- सहयोगी शिक्षण
- चिंतनशील पत्रिकाएँ
- वास्तविक जीवन के कार्य
- जीवन कौशल एकीकरण

11. अच्छा माहौल बनाने में स्कूल प्रिसिपल की भूमिका

एक प्रिसिपल इस तरह काम करता है:

- दूरदर्शी लीडर - माहौल और उम्मीदें तय करता है।
- इंस्ट्रक्शनल लीडर - पेडगोजी, असेसमेंट, कंटेंट प्रैक्टिस को गाइड करता है।
- मैनेजरियल लीडर - इंफ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक्स, रिसोर्स का रखरखाव करता है।
- इनक्लूसिव लीडर - डाइवर्सिटी, इक्विटी, एक्सेसिबिलिटी को बढ़ावा देता है।
- इमोशनल लीडर - टीचर और स्टूडेंट्स की भलाई में मदद करता है।
- कम्युनिटी लीडर - पार्टनरशिप बनाता है, रिसोर्स जुटाता है।

मुख्य कामों में शामिल हैं:

- समावेशी प्रवेश सुनिश्चित करना,
- विशेष शिक्षकों की नियुक्ति,
- आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम के मानदंडों को लागू करना,
- सीखने के परिणामों की निगरानी,
- मानसिक स्वास्थ्य प्रणालियों की स्थापना,
- शिक्षक विकास का समर्थन करना,
- सुरक्षित सीखने की जगहें बनाना।

12. स्कूल की प्रभावशीलता में एक अनुकूल सीखने के माहौल का महत्व

ऐसे माहौल से ये होता है:

- बेहतर उपस्थिति,
- वंचित शिक्षार्थियों का उच्च प्रतिधारण,
- बेहतर शैक्षणिक परिणाम,
- बेहतर सामाजिक-भावनात्मक कल्याण,
- उच्च शिक्षक संतुष्टि,
- माता-पिता का विश्वास बढ़ा,
- स्कूल की पूरी बेहतरीन पढ़ाई।

KVS/NVS प्रिसिपल एजाम में, सवाल अक्सर स्कूल की सफलता को सीधे लीडरशिप की माहौल को बदलने की क्षमता से जोड़ते हैं।

4. टीचर प्रोफेशनल डेवलपमेंट को मज़बूत करना

- समावेशी शिक्षा पर कार्यशालाएँ
- सहकर्मी अवलोकन और सलाह
- पीएलसी (पेशेवर शिक्षण समुदाय)
- डेटा-संचालित कक्षा सुधार

5. पेरेंट पार्टनरशिप बनाना

- कार्यशालाएँ, ओपन हाउस
- घर का दौरा
- शिक्षण संसाधन समूह
- अंकीय संचार

6. सम्मानजनक रिश्तों को बढ़ावा देना

- पूर्वाग्रह-विरोधी पाठ्यक्रम
- संघर्ष-समाधान तंत्र
- मिलकर बनाए गए क्लास के नियम

7. सुरक्षा और बचाव सुनिश्चित करना

- POCSO अनुपालन
- अप्री सुरक्षा अभ्यास
- मानसिक स्वास्थ्य संकट प्रोटोकॉल
- बदमाशी विरोधी समितियाँ

स्कूली शिक्षा में विविधता को समझना

1. शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अर्थ

डाइवर्सिटी का मतलब है किसी स्कूल या क्लासरूम में अलग-अलग सोशल, कल्चरल, भाषाई, इकोनॉमिक, साइकोलॉजिकल, कॉग्निटिव, बिहेवियरल और एक्सप्रीरिएशियल खासियतों का एक साथ होना। यह मानता है कि कोई भी दो सीखने वाले एक जैसे बैकग्राउंड, सीखने की स्पीड, सोशल एक्सप्रीरियंस, काबिलियत या ज्ञान को समझने के तरीके शेयर नहीं करते हैं।

एजुकेशनल लीडरशिप के मामले में, डाइवर्सिटी को एक **स्ट्रक्चरल सच्चाई**, एक पढ़ाने का **मौका** और एक **लीडरशिप की जिम्मेदारी माना जाता है**। इसमें दिखने वाले अंतर (जैसे विकलांगता या भाषा) और कम दिखने वाले अंदरूनी बदलाव (जैसे मोटिवेशन लेवल, इमोशनल मैच्योरिटी, कॉग्निटिव काम, सीखने का तरीका, मेंटल हेल्थ में उतार-चढ़ाव) दोनों शामिल हैं।

आजकल की स्कूलिंग में, डाइवर्सिटी कोई एक्सेप्शन नहीं है - यह नॉर्म है। NEP 2020 में साफ़ तौर पर कहा गया है कि इंडियन क्लासरूम नैचुरली डाइवर्स, मल्टीडाइमेशनल, मल्टीकल्चरल लर्निंग स्पेस हैं। एक स्कूल प्रिंसिपल को इकिटी, इनक्लूजन और एकेडमिक एक्सीलेंस बनाए रखने के लिए इस डाइवर्सिटी को मानना, मैनेज करना और उसका फ़ायदा उठाना चाहिए।

डाइवर्सिटी डेमोक्रेटिक स्कूलिंग के आदर्शों से गहराई से जुड़ी हुई है: हर बच्चे की पहचान का सम्मान करना, बराबर मौके देना, और बाहर रखने या भेदभाव को नकारना। यह करिकुलम प्लानिंग, पढ़ाने के तरीके, असेसमेंट, रिसोर्स देने, टीचर ट्रेनिंग, स्कूल के माहौल और ऑर्गेनाइजेशनल कल्चर पर असर डालता है।

2. स्कूलों में विविधता की प्रकृति

A. विविधता सार्वभौमिक और अंतर्निहित है

हर स्कूल, वाहे वह गांव का हो या शहरी, सरकारी हो या प्राइवेट, सामाजिक बहलता को दिखाता है। विविधता सिर्फ़ विकलांगता तक ही सीमित नहीं है; इसमें सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, घर की भाषा, सांस्कृतिक रीति-रिवाज, माता-पिता का जुड़ाव, व्यक्तित्व की खासियतें, मानसिक स्वास्थ्य और संपर्क के स्तर में अंतर भी शामिल हैं।

B. विविधता बहुस्तरीय और परस्पर जुड़ी हुई है

बच्चे अक्सर एक ही समय में एक से ज़्यादा पहचान दिखाते हैं - जैसे, एक लड़की जिसे सीखने में दिक्कत होती है और जो भाषाई अल्पसंख्यक और कम आर्थिक बैकग्राउंड से आती है। इसलिए प्रिंसिपल को एक इंटरसेक्शनल तरीका अपनाना चाहिए, यह देखना चाहिए कि अलग-अलग पहचानें आपस में मिलकर पढ़ाई में फ़ायदा या नुकसान कैसे पैदा करती हैं।

C. विविधता गतिशील है, स्थिर नहीं

बच्चों की पहचान समय के साथ बदलती है। उदाहरण के लिए, प्राइमरी क्लास में जिस स्टूडेंट को सीखने में कोई दिक्कत नहीं दिखती, उसे बाद में पढ़ने या ध्यान लगाने में दिक्कत हो सकती है। मेंटल हेल्थ की ज़रूरतें भी बदलती रहती हैं। लीडरशिप को स्टूडेंट की ज़रूरतों का समय-समय पर रिव्यू करने के लिए सिस्टम बनाने चाहिए।

D. विविधता संदर्भ पर निर्भर करती है

शहरी KVS स्कूल में एक आदिवासी स्टूडेंट, मेट्रो शहरों में एक माइग्रेंट स्टूडेंट, या किसी दूर-दराज के इलाके में फिजिकल डिसेबिलिटी वाला बच्चा, ये सभी अलग-अलग तरह के माहौल को दिखाते हैं, जिनके लिए सिचुएशन के हिसाब से लीडरशिप रिस्पॉन्स की ज़रूरत होती है।

3. स्कूल सेटिंग में विविधता की कैटेगरी

एक प्रिंसिपल को हर कैटेगरी को गहराई से समझना चाहिए क्योंकि KVS/NVS PYQs में अक्सर कॉन्सेप्चुअल, सिचुएशनल और एनालिटिकल सवाल पूछे जाते हैं।

1. सामाजिक विविधता

सामाजिक विविधता जाति, जनजाति, समुदाय, लिंग, धर्म, परिवार की बनावट, माझग्रेशन की स्थिति, माता-पिता के काम और सामाजिक वर्ग में अंतर से पैदा होती है।

इसके निहितार्थ ये हैं:

- एक्सपोज़र, कॉन्फिडेंस, सोशल कैपिटल और कम्प्युनिकेशन स्किल्स के अलग-अलग लेवल
- विभिन्न मूल्य, रीति-रिवाज और सामाजिक अपेक्षाएँ
- पूर्वाग्रह, रूढ़िबद्धता, बदमाशी, या साथियों द्वारा बहिष्कार की संभावना

स्कूलों को इनक्लूसिव करिकुलम, वैल्यू एजुकेशन और सेसिटिव डिसिप्लिन सिस्टम के ज़रिए भेदभाव वाली प्रैक्टिस का मुकाबला करना चाहिए।

2. सांस्कृतिक विविधता

कल्चरल डाइवर्सिटी का मतलब है रीति-रिवाजों, परंपराओं, त्योहारों, खाने-पीने की आदतों, पहनावे, विश्वासों, रीति-रिवाजों और दुनिया को देखने के नज़रिए में अंतर।

प्रिंसिपलों के लिए, सांस्कृतिक विविधता का असर इन पर पड़ता है:

- कक्षा में प्रवचन पैटर्न

- सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में बच्चे की भागीदारी
- माता-पिता की अपेक्षाएँ
- शिक्षक की धारणाएँ
- समुदाय-विद्यालय संबंध

एक कल्चर के हिसाब से स्कूल लोकल कल्चर से ताकत लेता है और देश की एकता को बढ़ावा देता है। प्रिंसिपल को यह पक्का करना चाहिए कि स्कूल के इवेंट्स, पढ़ाने का तरीका और टीचर का व्यवहार कल्चरल सेसिटिविटी को दिखाए।

3. भाषाई विविधता

भारत के मल्लीलिंगुअल स्ट्रक्चर की वजह से सीखने वाले हिंदी, इंग्लिश, आदिवासी भाषाएं, क्षेत्रीय बोलियां, माइनोरिटी भाषाएं और मिक्सड कोड बोलते हैं।

भाषाई विविधता के प्रभाव:

- कक्षा संचार
- समझ
- सहकर्मी बातचीत
- आत्म-सम्मान
- कक्षा चर्चाओं में भागीदारी

NEP 2020 में मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को सीखने का आधार बताया गया है। प्रिंसिपल को यह पक्का करना चाहिए:

- बहुभाषी प्रदर्शन
- द्विभाषी शिक्षण सहायक सामग्री
- गैर-प्रमुख भाषा सीखने वालों के लिए ब्रिजिंग रणनीतियाँ
- बहुभाषी शिक्षण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण

4. आर्थिक विविधता

आर्थिक अंतर, रिसोर्स, न्यूट्रिशन, हेल्थकेयर, किताबें, माता-पिता का सपोर्ट, टेक्नोलॉजी वाले डिवाइस और ट्रांसपोर्टेशन तक पहुंच में दिखाता है।

आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों के छात्रों को ये परेशानियां हो सकती हैं:

- कम शैक्षणिक आत्मविश्वास
- अनियमित उपस्थिति
- सीमित होमवर्क सहायता
- उच्च तनाव स्तर
- समृद्ध शिक्षा के लिए सीमित जोखिम

प्रिंसिपल को ये लागू करना होगा:

- उपचारात्मक सहायता
- काउंसलिंग
- मध्याह्न भोजन समन्वय (जहां लागू हो)
- समावेशी शुल्क नीतियाँ
- सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से संसाधन जुटाना

5. संज्ञानात्मक विविधता

कॉग्निटिव डाइवर्सिटी यह दिखाती है कि सीखने वाले कैसे अलग-अलग तरह के होते हैं:

- समझना
- व्याख्या
- इकट्ठा करना
- प्रक्रिया
- जानकारी लागू करें

इसमें ये बदलाव शामिल हैं:

- खुफिया प्रोफाइल (बहु खुफिया)
- सीखने की शैलियाँ (दृश्य, श्रवण, गतिज)
- सृजनी क्षमता
- ध्यान अवधि
- समझ कौशल
- कार्यकारी कामकाज

कॉग्निटिव डाइवर्सिटी के लिए अलग-अलग तरह के इंस्ट्रक्शन, फ्लेक्सिबल ग्रुपिंग और फॉर्मैटिव असेसमेंट स्ट्रेटेजी की ज़रूरत होती है।

6. व्यवहारिक विविधता

बिहेवियरल डाइवर्सिटी का मतलब है स्वभाव, पर्सनैलिटी, इमोशनल रेगुलेशन, कम्युनिकेशन स्टाइल, रिस्क बिहेवियर, साथियों के साथ बातचीत और क्लासरूम में व्यवहार में बदलाव।

आम व्यवहार में बदलाव में ये शामिल हैं:

- अंतर्मुखिता बनाम बहिर्मुखिता
- मुखरता के स्तर
- आवेगशीलता
- भावनात्मक संवेदनशीलता
- नेतृत्व की प्रवृत्तियाँ
- सामाजिक हिचकिचाहट

एजुकेशनल लीडरशिप में, बिहेवियरल डाइवर्सिटी को पॉजिटिव डिसिलिनरी प्रैक्टिस, SEL स्ट्रेटेजी, काउंसलिंग सिस्टम और लगातार रूटीन से एड्रेस किया जाना चाहिए।

7. योग्यता/विकलांगता विविधता

यह भी शामिल है:

- बौद्धिक अक्षमता
- संवेदी दुर्बलताएँ
- न्यूरोडेवलपमेंटल स्थितियाँ (एडीएचडी, ऑटिज्म, एसएलडी)
- शारीरिक दुर्बलताएँ
- मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विविधताएँ
- बहु विकलांगता

एबिलिटी डाइवर्सिटी की चुनौतियों के लिए स्कूलों को इनकलूसिव पेडागॉजी, असिस्टिव टेक्नोलॉजी, स्ट्रक्चरल एक्सेसिबिलिटी और कोलेबोरेटिव टीचिंग मॉडल लागू करने की ज़रूरत है।

8. सीखने के बैकग्राउंड के कारण विविधता

स्टूडेंट्स में अंतर होता है:

- पूर्व ज्ञान
- बचपन में जोखिम
- घरेलू साक्षरता अभ्यास
- माता-पिता का शैक्षिक स्तर
- पूर्व-विद्यालय अनुभव

इनसे सीखने में कमी आती है, जिसे ब्रिजिंग प्रोग्राम, एनरिचमेंट क्लास और RTI (रिस्पॉन्स टू इंटरवेंशन) के ज़रिए दूर किया जाना चाहिए।

9. मेंटल हेल्प और इमोशनल ज़रूरतों के कारण डायवर्सिटी

मेंटल हेल्प में अलग-अलग तरह की बातें नीचे दिए गए अंतरों से पता चलती हैं:

- तनाव सहनशीलता
- निपटने की रणनीतियाँ
- लचीलापन
- भावनात्मक परिपक्तता
- चिंता का स्तर
- सामाजिक आत्मविश्वास

स्कूल मेंटल हेल्प फ्रेमवर्क को इस पहलू पर ध्यान देना चाहिए ताकि अच्छी पढ़ाई पक्की हो सके।

4. विविधता के आयाम

एग्जाम-ओरिएंटेड लीडरशिप नोट्स के लिए मल्टी-लेयर्ड समझ की ज़रूरत होती है:

(ए) दृश्य विविधता

ये अंतर आसानी से देखे जा सकते हैं:

- शारीरिक अपंगता
- जातीयता
- लिंग
- भाषा
- सामाजिक-आर्थिक स्केटेक
- धार्मिक पोशाक

दिखने वाली डाइवर्सिटी के लिए स्टीरियोटाइपिंग को रोकने के लिए सेंसिटिविटी और प्रोएक्टिव इनक्लूजन स्ट्रेटेजी की ज़रूरत होती है।

(बी) दृश्य विविधता

ये अंतर अंदरूनी होते हैं और अक्सर पहचाने नहीं जाते:

- सीखने की अयोग्यता
- मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति
- आघात का इतिहास
- पारिवारिक समस्याएं
- संज्ञानात्मक प्रसंस्करण अंतर
- छिपी हुई प्रतिभाएँ
- भावनात्मक संघर्ष

प्रिंसिपल को छिपी हुई ज़रूरतों को जानने के लिए पहचान सिस्टम (स्क्रीनिंग, टीचर ऑब्जर्वेशन, काउंसलिंग एक्सेस) बनाना होगा।

(सी) जैविक और विकासात्मक विविधता

स्टूडेंट्स में अंतर होता है:

- परिपक्ता दर
- शारीरिक विकास
- संवेदी विकास
- मोटर कौशल
- यौवन से संबंधित भावनात्मक परिवर्तन

डेवलपमेंट के हिसाब से पढ़ाई, जुड़ाव और अनुशासन के लिए ज़रूरी है।

(D) अनुभवात्मक विविधता

सीखने वालों में अंतर होता है:

- यात्रा के अनुभव
- पाठ्येतर प्रदर्शन
- डिजिटल साक्षरता
- सांस्कृतिक प्रदर्शन
- घर पर सीखने में सहायता

ये क्रिएटिविटी, कम्युनिकेशन और क्लासरूम में हिस्सा लेने पर असर डालते हैं।

(ई) शैक्षिक विविधता

में मतभेद:

- स्कूल तत्परता
- पाठ्यक्रम प्रदर्शन
- सीखने की गति
- वैचारिक स्पष्टता
- मूल्यांकन अनुभव

एक स्कूल को हर सीखने वाले को सफल होने में मदद करने के लिए अलग-अलग रास्ते देने चाहिए।

(F) सामाजिक-भावनात्मक विविधता

स्टूडेंट्स में अंतर होता है:

- खुद पे भरोसा
- भावनात्मक स्थिरता
- संबंध-निर्माण क्षमता
- संघर्ष-प्रबंधन शैली
- सहानुभूति के स्तर

SEL प्रोग्राम, काउंसलिंग, मेंटरिंग और टीचर सेसिटिविटी ज़रूरी हैं।

(G) प्रेरक विविधता

स्टूडेंट्स में अंतर होता है:

- मूलभूत प्रेरणा
- बाहरी प्रेरणा
- उपलब्धि अभियान
- शैक्षणिक जुड़ाव
- सीखने की इच्छा

प्रिंसिपल को ऐसे रीइन्फोर्समेंट सिस्टम और सपोर्टिव माहौल बनाने चाहिए जो सभी लर्नर्स को मोटिवेट करें।

5. विविधता के शैक्षणिक निहितार्थ

एक प्रिंसिपल के लीडरशिप फैसलों में ये बातें दिखनी चाहिए:

A. पाठ्यक्रम योजना

- पाठ्यक्रम लचीला, बहुसांस्कृतिक और समावेशी होना चाहिए
- विविध आवाजों, इतिहासों और संदर्भों का प्रतिनिधित्व
- विभिन्न शिक्षार्थियों के लिए कई प्रवेश बिंदु

B. शैक्षणिक अभ्यास

- विभेदित शिक्षण विधियाँ
- कई निर्देशात्मक रणनीतियाँ
- समूह शिक्षण मॉडल
- विविधता को दर्शाने वाली शिक्षण सामग्री
- कमज़ोर शिक्षार्थियों के लिए मचान
- उन्नत शिक्षार्थियों के लिए संवर्धन

C. मूल्यांकन अभ्यास

- रचनात्मक, निरंतर मूल्यांकन पर जोर
- सीखने को प्रदर्शित करने के कई तरीके
- एक-आकार-सभी-के-लिए-उपयुक्त परीक्षण पर कम ध्यान
- विकलांग शिक्षार्थियों के लिए आवास

D. कक्षा प्रबंधन

- व्यवहारिक अपेक्षाओं को सांस्कृतिक विविधताओं पर विचार करना चाहिए
- सहायक, गैर-आलोचनात्मक वातावरण
- संघर्ष समाधान प्रोटोकॉल
- दंडात्मक उपायों के बजाय सकारात्मक सुदृढ़ीकरण

E. शिक्षक व्यावसायिक विकास

टीचर्स को इनके लिए ट्रेनिंग दी जानी चाहिए:

- बहुसांस्कृतिक समझ
- समावेशी शिक्षणशास्त्र
- सीखने के अंतराल को संबोधित करना
- व्यवहार संबंधी मुद्दों को संभालना
- मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं का समर्थन

6. एनईपी 2020 विविधता पर विजन

NEP 2020 भारत के बहुलवाद का सम्मान करने पर जोर देता है। KVS प्रिंसिपल परीक्षा के लिए ज़रूरी मुख्य सिद्धांत:

- शिक्षा में विविधता और समानता की पुष्टि होनी चाहिए
- शिक्षण पद्धति समावेशी, लचीली और शिक्षार्थी-केंद्रित होनी चाहिए
- बुनियादी साक्षरता में बहुभाषी विविधता पर विचार किया जाना चाहिए
- असमानता कम करने के लिए स्कूल कॉम्प्लेक्स को रिसोर्स शेयर करने चाहिए
- सामाजिक-आर्थिक रूप से वर्चित समूहों को लक्षित सहायता मिलनी चाहिए
- दिव्यांगों, आदिवासी शिक्षार्थियों, प्रवासी शिक्षार्थियों पर विशेष जोर

प्रिंसिपलों को NEP के विज्ञन को स्कूल-लेवल पर एक्शनेबल स्ट्रेटेजी में बदलना होगा।

7. डायवर्सिटी को मैनेज करने में प्रिंसिपल की भूमिका

एक KVS प्रिंसिपल से यह उम्मीद की जाती है:

- समानता और समावेश सुनिश्चित करने के लिए नीतियां बनाएं
- भेदभावपूर्ण प्रथाओं को समाप्त करें
- समावेशी शिक्षण के लिए शिक्षक क्षमता का निर्माण
- मातृभाषा-आधारित बहुभाषावाद लागू करना
- निष्पक्ष प्रवेश प्रथाओं को सुनिश्चित करें
- आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिए सामुदायिक संसाधन जुटाएँ
- काउंसलिंग और मानसिक स्वास्थ्य सहायता स्थापित करें
- दिव्यांगों को शामिल करने के लिए को-टीचिंग और रिसोर्स रूम की सुविधा देना
- सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण को प्रोत्साहित करें
- क्लासरूम के माहौल, साथियों के साथ रिश्ते और टीचर के व्यवहार पर नज़र रखें

एक प्रिंसिपल की लीडरशिप ही इस बात का मुख्य कारण है कि डाइवर्सिटी कैसे चुनौती के बजाय ताकत बनती है।

विकलांगता एक सामाजिक संरचना के रूप में

1. परिचय: विकलांगता की समझ का विकास

पहले, विकलांगता को बायोलॉजिकली समझा जाता था - किसी व्यक्ति में ऐसी कमी जिसे ठीक करने या मेडिकल मदद की ज़रूरत होती थी। इस कम करने वाले नज़रिए से पढ़ाई, नौकरी और समाज में हिस्सा लेने की गुंजाइश कम हो जाती थी। लेकिन, आज की पढ़ाई-लिखाई की सोच, ह्यूमन राइट्स मूवमेंट और इंटरनेशनल समझौतों (खासकर UNCRPD, 2006) ने विकलांगता को एक इंसानी समस्या से समाज द्वारा बनाई गई हालत में बदल दिया।

आज के समय में, डिसेबिलिटी का मतलब सिफ़्र कमज़ोरी होना नहीं है। डिसेबिलिटी तब होती है जब समाज आसान माहौल, सबको साथ लेकर चलने वाले मौके और बराबर की हिस्सेदारी देने में नाकाम रहता है। KVS/NVS जैसे स्कूल सिस्टम में प्रिंसिपल के लिए यह बदलाव बहुत ज़रूरी है क्योंकि इससे यह तय होता है कि सबको साथ लेकर चलने को कैसे सोचा जाए, लागू किया जाए और उसका मूल्यांकन कैसे किया जाए।

स्कूल सिफ़्र पढ़ाने की जगह नहीं हैं; वे सोशल संस्थाएँ हैं। जब स्कूल सिस्टम असंवेदनशील, सङ्ख्या, मदद न करने वाला या सबको साथ लेकर न चलने वाला होता है, तो वे विकलांगता पैदा करते हैं। इसके उलट, जब रुकावटें हटा दी जाती हैं, तो कमज़ोर छात्र अपने साथियों के बराबर आगे बढ़ते हैं।

2. मेडिकल मॉडल बनाम सोशल मॉडल: कॉन्सेप्चुअल फाउंडेशन

A. विकलांगता का चिकित्सा मॉडल

मेडिकल मॉडल विकलांगता को इस तरह देखता है:

- सामान्य से कमी या विचलन,
- बच्चे में कमज़ोरी के कारण,
- नैदानिक निदान और उपचार की आवश्यकता,
- मेडिकल कैटेगरी (फिजिकल, सेंसरी, इंटेलेक्चुअल, वैगरह) में कम किया जा सकता है।

मेडिकल मॉडल के एजुकेशनल असर में ये शामिल हैं:

- पृथक स्कूली शिक्षा (विशेष स्कूल),
- बच्चों से सीमित अपेक्षाएँ,
- ताकत के बजाय कमियों पर निर्भरता,
- लेबलिंग और कलंक,
- मुख्यधारा के क्लासरूम के काम से बाहर रखा जाना।

यह मॉडल 1990 के दशक तक भारतीय शिक्षा पर हावी रहा और आज भी कुछ नज़रियों पर असर डालता है।

B. विकलांगता का सामाजिक मॉडल

सोशल मॉडल का मानना है कि डिसेबिलिटी समाज की रुकावटों से होती है, सिफ़्र कमी से नहीं। कमी एक शारीरिक/मानसिक स्थिति है; डिसेबिलिटी कमी और आस-पास की रुकावटों के बीच के तालमेल का नतीजा है।

इस मॉडल के तहत, रुकावटों में शामिल हैं:

- दुर्गम इमारतें,
- कठोर पाठ्यक्रम,
- नकारात्मक दृष्टिकोण,
- सहायक उपकरणों की कमी,
- समावेशी शिक्षाशास्त्र का अभाव।

इस तरह, डिसेबिलिटी कोई पर्सनल ट्रेजेडी नहीं है, बल्कि यह समाज का इंसानों की अलग-अलग तरह की चीज़ों के साथ एडजस्ट न कर पाना है।

C. अधिकार-आधारित दृष्टिकोण (समकालीन परिप्रेक्ष्य)

आधुनिक भारतीय नीति (आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016, एनईपी 2020) एक अधिकार-आधारित प्रतिमान को अपनाती है, जो इस बात पर जोर देती है कि:

- विकलांगता मानव विविधता का एक आयाम है,
- बच्चों को समान भागीदारी का अधिकार है,
- स्कूलों को खुद को ढालना होगा,
- उचित आवास अनिवार्य है,
- समावेशी शिक्षा एक बुनियादी अधिकार है,
- भेदभाव गैरकानूनी है।

अधिकार-आधारित स्कूली शिक्षा ज़िम्मेदारी बच्चे से सिस्टम पर स्थानांतरित करती है।

3. सामाजिक रूप से पैदा हुई विकलांगता - सैद्धांतिक व्याख्या

कोई बच्चा "डिसेबल्ड" इसलिए नहीं बनता कि उसे कोई कमी है, बल्कि इसलिए बनता है क्योंकि सीखने की जगहों को बिना किसी फर्क पर ध्यान दिए बनाया जाता है।

उदाहरण:

- कम नज़र वाला बच्चा तभी दिव्यांग माना जाता है, जब टेक्स्टबुक बड़े प्रिंट में उपलब्ध न हों।
- सुनने में दिक्कत वाला बच्चा तब दिव्यांग हो जाता है जब टीचरों को विज़ुअल पेडागॉजी की ट्रेनिंग नहीं मिलती।
- धीमी प्रोसेसिंग स्पीड वाला बच्चा "डिसेबल्ड" हो जाता है जब करिकुलम सख्त और टाइम-बाउंड होता है।
- क्लीलचेयर इस्तेमाल करने वाला बच्चा तभी विकलांग होता है जब रैप न हों।

इस प्रकार, विकलांगता इनसे बनती है:

1. वास्तविक बाधाएँ
2. मनोवृत्ति संबंधी बाधाएँ
3. संस्थागत/नीतिगत बाधाएँ
4. शैक्षणिक बाधाएँ
5. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ

इन लेयर्स को समझना प्रिसिपल की स्कूल-वाइड इनक्लूजन स्ट्रेटेजी के लिए ज़रूरी है।

4. रुकावटों के प्रकार: गहरी एनालिटिकल चर्चा

A. मनोवृत्ति संबंधी बाधाएँ

विकलांगता के बारे में नेगेटिव सोच सबसे ज़्यादा रोकने वाली होती है।

उदाहरणों में शामिल हैं:

- विकलांगता को बोझ के रूप में देखना,
- असमर्थता मानते हुए,
- बच्चों को लेबल करना,
- गतिविधियों में भाग लेने से इनकार करना,
- समान के बजाय दया,
- शिक्षकों को कम प्रदर्शन की उम्मीद है,
- माता-पिता अपने बच्चे को बहुत ज़्यादा प्रोटेक्ट करते हैं।



स्कूलों में, नज़रिए से जुड़ी रुकावटें इन वजहों से दिखती हैं:

- परिहार,
- बहिष्करणात्मक अनुशासन,
- एकेडमिक उम्मीदें कम हो गईं।

एक प्रिसिपल को ट्रेनिंग, पॉलिसी, ओरिएंटेशन और कल्चरल ट्रांसफॉर्मेशन के ज़रिए इस पर ध्यान देना चाहिए।

B. भौतिक और स्थापत्य संबंधी बाधाएं

इसमें शामिल है:

- रैप की अनुपस्थिति,
- दुर्गम शैचालय,
- संकरे दरवाजे,
- खड़ी सीढ़ियाँ,
- दुर्गम खेल के मैदान,
- अनुचित बैठने की व्यवस्था,
- खराब साइनेज।

RPWD एक्ट सभी एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन में बिना रुकावट के आने-जाने को ज़रूरी बनाता है।

C. संचार बाधाएँ

इसमें टेक्नोलॉजिकल और भाषाई दोनों तरह की रुकावटें शामिल हैं:

- सांकेतिक भाषा दुभाषियों की कमी,
- कैषण वाले वीडियो का अभाव,
- जटिल शैक्षणिक शब्दावली,
- कोई स्पर्शनीय या ब्रेल सामग्री नहीं,
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक पहुंच नहीं है।

एक प्रिसिपल को कम्युनिकेशन के कई तरीके पक्का करने चाहिए।

D. शैक्षणिक बाधाएँ

सञ्चात पढ़ाने के तरीकों से पढ़ाने में दिक्कत होती है।

उदाहरण:

- सभी छात्रों के लिए एक ही तरह की पढ़ाई,
- विभेदित निर्देश का अभाव,
- दृश्य सहायता का अभाव,
- गति-केंद्रित शिक्षण,
- मेमोरी-बेस्ड इवैल्यूएशन पर निर्भरता।

इन्कलूसिव पेड़ागोजी फ्लेक्सिबिलिटी के ज़रिए इन रुकावटों को दूर करती है।

E. पाठ्यक्रम बाधाएँ

एक जैसा करिकुलम अक्सर अलग-अलग तरह के सीखने वालों को बाहर कर देता है।

करिकुलम रुकावटों में शामिल हैं:

- सामग्री-भारी पाठ्यक्रम,
- अनुभवात्मक शिक्षा का अभाव,
- जटिल भाषा स्तर,
- सीमित संदर्भिकरण।

प्रिंसिपल को करिकुलम अडैप्टेशन प्रोसेस को लीड करना चाहिए।

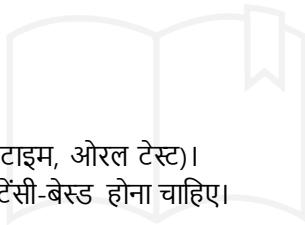
एफ. मूल्यांकन बाधाएँ

पारंपरिक परीक्षाएं कई सीखने वालों को अक्षम बना देती हैं।

बाधाओं में शामिल हैं:

- समयबद्ध परीक्षण,
- पूरी तरह से लिखित आकलन,
- वैकल्पिक साधनों का अभाव,
- दिव्यांगों के लिए कोई बदलाव नहीं (लेखक, एक्स्ट्रा टाइम, ओरल टेस्ट)।

इन्कलूसिव असेसमेंट फ्लेक्सिबल, फॉर्मेटिव, कॉम्पिटेंसी-बेस्ड होना चाहिए।



5. विकलांगता का सांस्कृतिक निर्माण

कल्वर तथ करता है कि समाज क्या "नॉर्मल" और "एबनॉर्मल" मानता है।

कुछ कल्वर कुछ कमज़ोरियों को गलत मानते हैं, जबकि दूसरे उन्हें अपनाते हैं। व्यवहार, बातचीत, अनुशासन, जेंडर रोल और एकेडमिक परफॉर्मेंस के बारे में कल्वरल उम्मीदें इस बात पर असर डालती हैं कि कमज़ोर बच्चे को कैसे देखा जाता है।

शहरी स्कूलिंग में देसी और आदिवासी कल्वर में सबको साथ लेकर चलने वाले लोकल तरीके खत्म हो सकते हैं।

आजकल का मास कल्वर अक्सर कीमत को कॉम्पिटिशन से जोड़ता है, जिससे दिव्यांग स्टूडेंट्स और भी पीछे छूट जाते हैं।

6. विकलांगता की नीति और संस्थागत निर्माण

एजुकेशनल पॉलिसी एक्सेस और पार्टिसिपेशन तथ करती हैं।

सञ्चात एडमिशन पॉलिसी, सपोर्ट सर्विस की कमी, स्पेशल एजुकेटर्स की कमी, मुश्किल इंफ्रास्ट्रक्चर, और ज़्यादा पढ़ाई का दबाव इंस्टीट्यूशनल डिसेबिलिटी में योगदान करते हैं।

RPWD एक्ट 2016 और NEP 2020 का मकसद इसे बदलना है:

- वैधानिक अधिकार,
- उचित आवास,
- संसाधन समर्थन,
- प्रणालीगत परिवर्तन,
- समावेशी स्कूली शिक्षा के आदेश।

प्रिंसिपल का कम्प्लायंस कानूनी तौर पर लागू होता है।

7. समावेशी शिक्षा के लिए सामाजिक मॉडल के निहितार्थ

A. जिम्मेदारी का स्थानांतरण

से: "सीमा वाले बच्चे को समायोजित होना चाहिए"

तक: "स्कूल को शिक्षार्थी के अनुकूल होना चाहिए।"

B. रुकावटों को दूर करने पर ध्यान दें

इन्कलूजन तब मिलता है जब सभी रुकावटें - फिजिकल, एटिट्यूडिनल, पेड़ागोजिकल - खत्म हो जाती हैं।

C. विविधता का सम्मान करना

विकलांगता सीखने वाले के बदलाव का हिस्सा बन जाती है, असामान्यता का नहीं।

D. भागीदारी को बढ़ावा देना

बच्चों को इसमें शामिल होना चाहिए:

- कक्षा में चर्चा,
- सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ,
- नेतृत्व भूमिकाएं।

E. शिक्षार्थियों को सशक्त बनाना

स्टूडेंट्स को पैसिव रिसीवर नहीं होना चाहिए; उनके पास आवाज़, चॉइस और एजेंसी होनी चाहिए।

8. एडवांस्ड एजुकेशनल लीडरशिप पर्सेप्रेक्टिव

एक प्रिसिपल को यह समझना चाहिए कि स्कूल सिस्टम कैसे विकलांगता पैदा करते हैं या दूर करते हैं:

A. स्कूल संरचनाएं

सख्त टाइमटेबल, पूरी क्लास को पढ़ाना, कॉम्प्युटिटिव ग्रेडिंग से लोग अलग-थलग पड़ जाते हैं।

लीडरशिप को फ्लेक्सिबिलिटी, पर्सनलाइज्ड सोर्पोर्ट और मिलकर सीखने का तरीका लाना चाहिए।

B. शिक्षक का रैख्या

टीचर्स की सोच उम्मीदों, फ्रीडबैक और क्लासरूम के माहौल पर असर डालती है।

प्रोफेशनल डेवलपमेंट को बायस को चुनौती देनी चाहिए और टीचर्स को सबको साथ लेकर चलने वाली स्ट्रेटेजी से तैयार करना चाहिए।

C. पाठ्यक्रम और मूल्यांकन सुधार

प्रिसिपल को इन तरीकों से करिकुलम को बदलना पक्का करना होगा:

- भाषा को सरल बनाना,
- आवश्यक परिणामों का चयन,
- व्यावहारिक कार्यों को एकीकृत करना,
- मल्टीमॉडल असेसमेंट डिजाइन करना।

D. स्टाफ सहयोग

स्पेशल एजुकेटर्स, काउंसलर्स, सब्जेक्ट टीचर्स और क्लास टीचर्स को IEPs, को-टीचिंग और केस कॉन्फ्रेंस के ज़रिए मिलकर काम करना चाहिए।

E. सामुदायिक भागीदारी

सबको साथ लेकर चलने वाली स्कूलिंग के लिए कम्युनिटी की भागीदारी ज़रूरी है - जैसे माता-पिता, हेत्य वर्कर, लोकल बॉडी, डिसेबिलिटी ऑर्गनाइज़ेशन।

9. एनईपी 2020 परिप्रेक्ष्य: विविधता के आयाम के रूप में विकलांगता

NEP 2020 एक बड़ा बदलाव ला रहा है, जिसमें ये घोषणाएं की गई हैं:

- दिव्यांग बच्चों को अच्छी स्कूली शिक्षा पाने का समान अधिकार है
- समावेशन समानता का आधार है
- टीचर ट्रेनिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, करिकुलम अडैटेशन के ज़रिए रुकावटों को दूर किया जाना चाहिए
- भारतीय सांकेतिक भाषा को मानकीकृत किया जाना चाहिए
- रिसोर्स सेंटर और स्कूल कॉम्प्लेक्स को समावेशी शिक्षा का समर्थन करना चाहिए
- फ्लेक्सिबल रास्ते (कई मोड) सुनिश्चित किए जाने चाहिए

NEP बच्चों को अलग रखने को मना करता है, सिवाय उन बहुत ज़्यादा मामलों के जहाँ बहुत ज़्यादा मदद की ज़रूरत हो।

10. RPWD एक्ट 2016: स्कूलों में सोशल मॉडल के लिए कानूनी आधार

यह एक्ट कानूनी तौर पर विकलांगता को कमज़ोरी और रुकावटों के बीच एक डायनामिक इंटरैक्शन के तौर पर बताता है।

एजुकेशनल इंस्टील्यूशन को यह पक्का करना होगा:

- गैर-भेदभाव
- उचित आवास
- बाधा-मुक्त पहुँच
- समावेशी पाठ्यक्रम
- विशेष शिक्षकों
- सुलभ संचार
- दुर्व्यवहार, उपेक्षा, बहिष्कार की रोकथाम

किसी भी फेलियर पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है।

- 11. सोशल मॉडल को लागू करने में प्रिसिपल की बदलाव लाने वाली भूमिका
प्रिसिपल को यह बनना चाहिए:**
- A. समावेशी नेता**
टीवर्स को गाइड करता है, स्कूल पॉलिसी बनाता है, बिना रुकावट वाला कल्चर पक्का करता है।
 - B. संगठनात्मक डेवलपर**
अलग-अलग तरह के सीखने वालों को सपोर्ट करने के लिए सिस्टम को रीस्ट्रक्चर करता है।
 - C. अधिकारों के लिए वकील**
RPWD, NEP, CBSE नियमों का पालन पक्का करता है।
 - D. संसाधन प्रबंधक**
असिस्टिव टेक्नोलॉजी खरीदना, कालिफाइड स्टाफ हायर करना, सर्विसेज को कोऑर्डिनेट करना।
 - E. सांस्कृतिक सुधारक**
इन्क्लूजन, एपैथी और रिस्पेक्ट का मॉडल बनाकर नज़रिया बदलता है।

12. KVS प्रिसिपल एजाम के लिए सोशल कंस्ट्रक्शन का नज़रिया क्यों ज़रूरी है

PYQs में अक्सर इन चीज़ों की समझ की ज़रूरत होती है:

- सामाजिक मॉडल ढांचा
 - अधिकार-आधारित स्कूली शिक्षा
 - स्कूल संस्कृति में परिवर्तन
 - प्रधानाचार्य की जिम्मेदारियाँ
 - बाधा-मुक्त शिक्षण स्थान
 - विकलांगता को समानता और समावेशन से जोड़ना
- इसलिए, डिटेल्ड कॉन्सोच्चुअल मास्टरी ज़रूरी है।

विकलांगता के प्रकार: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण

1. परिचय: स्कूल लीडरशिप में क्लासिफिकेशन क्यों ज़रूरी है

स्कूलों को अलग-अलग ज़रूरतों वाले बच्चों की पहचान करनी चाहिए, उन्हें सपोर्ट करना चाहिए और उनके लिए सीखने की प्रक्रिया को बदलना चाहिए। इसके लिए, प्रिसिपल को क्लासिफिकेशन सिस्टम की गहरी जानकारी होनी चाहिए क्योंकि वे ये बनाते हैं:

- प्रवेश दिशानिर्देश
- पाठ्यक्रम समायोजन
- शिक्षक तैनाती
- संसाधन नियोजन
- मूल्यांकन संशोधन
- विशेषज्ञों के साथ सहयोग
- आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम और सीबीएसई मानदंडों का अनुपालन

कई ग्लोबल और इंडियन फ्रेमवर्क मौजूद हैं, जिनमें से हर एक खास मक्सद पूरा करता है - डायग्नोस्टिक, फंक्शनल, एजुकेशनल, लीगल। KVS प्रिसिपल को इन पर मास्टरी होनी चाहिए।

2. प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय वर्गीकरण ढांचे

1. UNESCO/WHO ICF क्लासिफिकेशन (इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ़ फंक्शनिंग, डिसेबिलिटी एंड हेल्थ)
एक होलिस्टिक मॉडल जो डिसेबिलिटी को इन चीज़ों के इंटरैक्शन के तौर पर पहचानता है:

- हानि (शारीरिक कार्य/संरचना),
- गतिविधि सीमाएँ,
- भागीदारी प्रतिबंध,
- पर्यावरण संबंधी बाधाएँ।

यह मॉडल सामाजिक और अधिकार-आधारित नज़रिए से मेल खाता है।

लीडरशिप की अहमियत

ICF काम करने पर ज़ोर देता है, लेबल पर नहीं। प्रिसिपल को ऐसा माहौल बनाना चाहिए जो काम करने में आने वाली रुकावटों (जैसे, रैंप, ICT सपोर्ट) को कम करे।

2. ICD (इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ़ डिज़ीज़ - WHO)

विकलांगता के मेडिकल डायग्नोसिस में इस्तेमाल होता है।

कैटेगरी में शामिल हैं:

- बौद्धिक विकार
- दृष्टि/श्रवण हानि

- शारीरिक दुर्बलताएँ
- तंत्रिका संबंधी विकार
- मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति
हालांकि ICD मेडिकल सर्विस के लिए गाइड करता है, लेकिन स्कूल अकोमोडेशन और रिसोर्स एलोकेशन के लिए सर्टिफाइड रिपोर्ट पर भरोसा करते हैं।

3. DSM-5 (डायग्नोस्टिक और स्टैटिस्टिकल मैनुअल - APA)

पहचान के लिए ज़रूरी:

- ऑटिज़म स्पेक्ट्रम विकार (ASD)
- एडीएचडी
- विशिष्ट अधिगम विकलांगता (एसएलडी)
- संचार विकार
- बौद्धिक अक्षमता

DSM-5 ने कठोर कैटेगरी वाले लेबल से स्पेक्ट्रम-आधारित तरीके को अपनाया, जो मैनिफेस्टेशन में विविधता को दिखाता है।

4. IDEA (विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम - USA)

इनकलूसिव स्कूलिंग के लिए इंटरनेशनल बेचमार्क।

IDEA कैटेगरी:

- एसएलडी
- आईडी (बौद्धिक विकलांगता)
- एएसडी
- भावनात्मक अशांति
- वाणी/भाषा की दुर्बलता
- श्रवण बाधित
- दृश्य हानि
- आर्थोपेडिक दुर्बलता
- बहु विकलांगता
- टीबीआई
- अन्य स्वास्थ्य हानियाँ

हालांकि भारतीय स्कूल RPWD एक्ट को मानते हैं, लेकिन IDEA का एजुकेशनल फोकस प्रिंसिपल के लिए ऑपरेशनली मददगार है।

5. आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 (भारत)

KVS/NVS लीडरशिप के लिए सबसे ज़रूरी फ्रेमवर्क।

बड़े ग्रुप के तहत 21 डिसेबिलिटी को पहचानता है :

1. शारीरिक अपंगता
2. बौद्धिक विकलांगता
3. मानसिक व्यवहार (मानसिक बीमारी)
4. पुरानी न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के कारण विकलांगता
5. रक्त विकार
6. बहरापन-अंधापन सहित कई विकलांगताएँ
7. विशिष्ट अधिगम अक्षमताएँ
8. ऑटिज़म स्पेक्ट्रम विकार
9. वाक् एवं भाषा विकलांगता
10. एसिड हमले के पीड़ितों
11. पार्किंसन्स रोग

यह एक्ट स्कूल की ज़िम्मेदारियों, रिसोर्स के बंटवारे और कानूनी पालन को तय करता है।

3. एजुकेशनल जानकारी के लिए विकलांगता की बड़ी कैटेगरी

लीडरशिप की गहरी समझ को सपोर्ट करने के लिए स्कूल से जुड़ा क्लासिफिकेशन नीचे दिया गया है।

A. बौद्धिक और विकासात्मक विकलांगता (IDD)

1. बौद्धिक अक्षमता (ID)

इनके द्वारा विशिष्ट बना:

- औसत से काफी कम बौद्धिक कार्यप्रणाली
- अनुकूल व्यवहार में सीमाएं (संचार, सामाजिक कौशल, स्वयं की देखभाल)
- 18 वर्ष की आयु से पहले शुरू होना

स्तर:

- हल्का
- मध्यम
- गंभीर
- गहरा

शैक्षिक विशेषताएँ:

- धीमी गति से सीखने
- ठोस, व्यावहारिक गतिविधियों की ज़रूरत है
- तर्क करने में कठिनाई, अमूर्त सोच
- संरचित दिनचर्या की आवश्यकता है
- बार-बार सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता

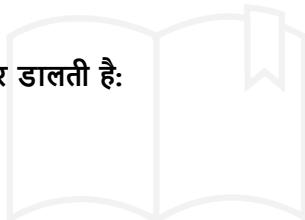
स्कूल की रणनीतियाँ:

- सरलीकृत पाठ्यक्रम
 - कार्य विश्लेषण
 - दृश्य अनुसूचियाँ
 - वास्तविक जीवन कौशल प्रशिक्षण
 - सहकर्मी-सहायता प्राप्त शिक्षण
 - जीवन कौशल और व्यावसायिक एकीकरण
- लीडरशिप को स्पेशल एजुकेटर सपोर्ट और टीचर्स के बीच सहयोग पक्का करना चाहिए।

2. स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटीज (SLD)

एक न्यूरोडेवलपमेंटल कंडीशन जो इन पर असर डालती है:

- पढ़ना (डिस्लोक्सिया)
- लेखन (डिस्ग्राफिया)
- गणित (डिस्कैलकुलिया)
- लिखित अभिव्यक्ति
- वर्तनी



SLD का इंटेलिजेंस से कोई संबंध नहीं है। कई सीखने वाले एवरेज या एवरेज से ऊपर होते हैं।

विशेषताएँ:

- धीमी, गलत रीडिंग
- अक्षर उलटना
- अच्छी बोलने की क्षमता के बावजूद समझने में कठिनाई
- खराब वर्तनी
- लिखावट की समस्याएं
- धीमी लेखन गति
- संख्याओं, अनुक्रमों को संभालने में कठिनाई

स्कूल के निहितार्थ:

- बहुविध शिक्षण
- ग्राफिक आयोजकों
- परीक्षा में अतिरिक्त समय
- जहाँ आवश्यक हो मौखिक परीक्षाएँ
- व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (IEPs)
- सहायक सॉफ्टवेयर

3. ऑटिज़म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)

अलग-अलग गंभीरता वाली न्यूरोडेवलपमेंटल कंडीशन का एक स्पेक्ट्रम।

मुख्य क्षेत्र:

- सामाजिक संचार में चुनौतियाँ
- दोहरावदार व्यवहार
- प्रतिबंधित हितों
- संवेदी अंतर (अतिसंवेदनशीलता या अल्पसंवेदनशीलता)